IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पण्डित नेहरू के पंचशील के सिद्धांत वर्तमान भारत चीन संबंधों का वास्वविक आधार

डॉ. वर्षा सागोरकर,

सह प्राध्यापक राजनीति विज्ञान

शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल

संक्षेपिका—

शांतिपूर्ण सह—अस्तित्व के पांच सिद्धांत जिन्होंने लोकप्रिय शब्दावली में पंचशील के नाम से जाना है उसे वर्तमान में शांति, सुरक्षा एवं सहयोग का शक्तिस्तम्भ कहा जा सकता है। जिसके मूल प्रवर्तक पण्डित जवाहर लाल नेहरू एवं चीन के प्रथम प्रधानमंत्री श्री चाऊ—इन—लाई थे। 28 जून 1954 को नई दिल्ली में दोनों देशों के प्रधानमंत्रीयों की वार्ता के पश्चात् भारत एवं चीन द्वारा जो संयुक्त बयान जारी किया गया उसमें प्रथम बार पंचशील के सिद्धांतों का उल्लेख किया गया। भारत एवं चीन के मध्य संबंधो के छः (6) दशक पूर्ण हो चुके है इसके लिए 28 जून 2019 एक बड़े आयोजन कर उपराष्ट्रीय श्री हमीद अंसारी एवं उनके साथ एक शिष्ट मंडल बीझिंग गया। ब्रिक्स समिट में प्रधानमंत्रीयों की द्विपक्षीय वार्ता के दौरान भी चीन भारत के पंचशील के 5 सिद्धांतों के साथ सहयोग करने हेतु तैयार है। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भारत की विदेश नीति को एक ऐसा अवसर के रूप में विश्व मंच पर स्थापित कर सके। पंडित नेहरू की विदेश नीति का महत्वपूर्ण भाग था उनके द्वारा प्रतिपादित पंचशील का सिद्धांत जिसमें राष्ट्रीय सम्प्रभुता बनाए एवं दूसरे राष्ट्रों के आन्तरिक मामलों में हस्ताक्षेप ना करना आदि 5 (पांच) शांति के सिद्धांत सम्मिलित थे। इनमें सबसे महत्वपूर्ण यह था कि विश्व के अन्य राष्ट्रों का भारत की स्वतन्त्रता इग्लैण्ड अथवा ब्रिटिश शासन को कोई उपनिवेशवादी नीति है। किन्तु नेहरू वह प्रथम व्यक्ति नेता जिन्होंने राष्ट्रों को यह विश्वास दिलाया कि अर्न्तराष्ट्रीय क्षेत्र में भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र है स्वतन्त्र विदेश नीति, गुटनिरपेक्षता एवं पंचशी के सिद्धांतों का पालन करते हैं।

प्रमूख शब्द — डोकलम, प्रतिकार, विशेषाधिकार, मानवीय व्यवहार, आत्मीयता।

प्रस्तावना—

भारत एवं चीन एशियाई महाद्वीप के दो महान राष्ट्र है जहां कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत भाग निवासित है दोनों ही राष्ट्र विकास की ओर अग्रसर राष्ट्र है। सोवियत संघ के विघटन एवं समाजवाद के विर्सजन के उपरान्त विश्व में शीत युद्ध का अंत हुआ एवं इस परिवर्तित राजनीतिक परिवेश में भारत एवं चीन का कद विश्व राजनीति में और अधिक बढ़ गया। पण्डित नेहरू आधुनिक राष्ट्र राज्य एक सम्प्रभु समाजवादी धर्म निरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य के वास्तुकार के नाम से जाने जाते हैं। भारत का संविधान 1950 में अधिनियमित हुआ उसके उपरांत उन्होंने आर्थिक सामाजिक व

राजनीतिक सुधारों की महत्वकांक्षी योजनाओं का प्रारम्भ किया। मुख्यतः उनका स्वप्न एक बहुवचनीय लोकतंत्र को प्रोषित करना था। उन्होंने ने ही एक उपनिवेश से गणतन्त्र की ओर अग्रसर होने में भारत का पोषण किया। विदेश नीति में दक्षिण एशिया में भारत को वे एक क्षेत्रीय नायक के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहते थे। इसलिए उनके द्वारा गुटनिरपेक्षता, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व व पंचशील के सिद्धांतों का निर्माण किया। 1951,1957, 1962, के निर्वाचन में निरन्तर विजय प्राप्त करते हुए कांग्रेस का एक सर्वग्रहणीय दल के रूप में स्थापित किया। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कोरियाई युद्ध का अन्त, स्वेज नहर एवं कांगों समझौते को मूर्त रूप देने में मध्यस्थ की भूमिका का निर्वाह किया। पश्चिम बर्लिन आस्ट्रिया लाओस के विस्फोटक मुद्दो पर परदे के पीछे रहकर महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। मात्र वे भारत चीन संबंधो को सुधार नहीं पाये काश्मीर का मुद्दा भी भारत चीन संबंधो में विवाद का कारण रहा है। इस असफलता के पश्चात् भी लोक प्रिय बने रहे।

इतिहास—

पंचशील बौद्ध धर्म की मूल आचार संहिता है जिसको थेरवाद बौद्ध उपासक एवं उपासिकाओं के लिए पालनार्थ आवश्यक माना गया है। भारत के लिए पंडित नेहरू ने पंचशील शब्द बौद्ध अभिलेखों से लिया जिसमें बौद्ध भिक्षुओं का व्यवहार निर्धारित करने वाले 5 तत्वों को निषेध किया गया है। इस सिद्धांत के अन्तर्गत हिंसा नाकरना अर्थात् अंहिसा, वास्तविक रूप में इन्हें चोरी ना करना अर्थात सत्य व्यमिचारना करना, अर्थात अस्तेय झूठ ना बोलना एवं नशा ना करना इन्हें पाली भाषा में लिखा गया है। जैसे 5 सिद्धांतों का समावेश किया गया है। प्राचीनकाल में भारत में मुनस्मृति में वर्णित धर्म के 10 लक्षणी तथा बौद्ध काल की पंसिका आदि में गृहस्थों के आचार—व्यवहार संबंधी नियमों का उल्लेख मिलता है। भारत में बौद्ध धर्म का प्रचार—प्रसार चीन की भूमि पर हुआ। चीन के लोगों ने बौद्ध धर्म की शिक्षा ग्रहण करने के लिए नालन्दा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय का चयन किया। ब्रिटिश शासन के काल में लगभग 4062 किलोमीटर की सीमा ब्रिटिश भारत एवं चीन के मध्य सीमा सांझा करने के लिए ब्रिटिश शासन ने एक समिति का निर्माण किया था जिसके अध्यक्ष सर हेनरी मेक मोहन विदेश सचिव थे जिन्होंने भारत एवं चीन के मध्य 890 किलोमीटर की सीमा रेखा तय की जिसका नाम उसके नाम पर मेंकमोहन रेखा रखा गया।

इसी तरह चीनी विचारक कन्फ्यूसियस ने सदैव ही मतभेदो के मध्य परस्पर आत्मियता एवं मानवीय व्यवहार की रूपरेखा प्रस्तुत की। चीन के लोगों की दृष्ट्रि में भारत भगवान बुद्ध की पावन जन्म भूमि है। महात्मा बुद्ध के विचार सदियों से दोनों राष्ट्रों को आपस में जोड़ते रहे हैं औपनिवेशिक शासन के काल में भी दोनों राष्ट्र एक दूसरे के करीबी रहे हैं महात्मा गांधी ने कहा था कि ''मैं उस दिन की आंकाक्षा करता हूॅ कि स्वतंत्र भारत हिन्द एवं स्वतन्त्र चीन अपनी भलाई के लिए सम्पूर्ण एशिया की भलाई के लिए सहयोग पर काम करेगे।'' औपनिवेशिक काल में ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के आग्रह पर एक उच्चस्तरीय दल के साथ मिशनरी डॉ. द्वारकानाथ कोटनीस को भारत चीन संबंधो का अध्ययन करने हेतु चीन भेजा था।

विवाद — भारत ने सन् 1947 एवं चीन ने सन् 1949 में स्वतन्त्रता को प्राप्त किया। 1946 में ही चीन में साम्यवादी शासन की स्थापना हो चुकी थी एवं जापानी साम्राज्यवाद के विरूद्ध चीन के संघर्ष के प्रति सहानुभूति प्रगट करने वाला भारत प्रथम राष्ट्र था। पंचशील के सिद्धांत पण्डित नेहरू ने जो उन्हें विरासत में प्राप्त हुए थे को अपनी विदेश नीति का आधार बनाया। भारत को 1904 में एंग्लोतिष्टन संधि के तहत् तिब्बत के संबंध में कुछ विशेषाधिकारों की प्राप्ति हुई थी। ल्हासा में भारत का एक एजेन्ट, ग्यान्टसें जाने वाले व्यापारिक मार्ग पर एक डाक एवं तारघर तथा उसकी सुरक्षा के लिए एक छोटी सी सैनिक टुकड़ी। 1950 में सरदार वल्लभभाई पटेल ने प. नेहरू को एक पत्र लिखा कि ''चीन हमारे देश के साथ धोखा

छल एवं विश्वासघात कर रहा है क्योकि चीन आसाम के कुछ भागों पर नजरें गड़ाये बैठा है अतः इस समस्या का तत्काल समाधान करे।''

प. नेहरू ने पंचशील के सिद्धांतों को आदर्श मानकर एक समझौता करने पर चीन से वार्तालाप किया इसके संबंध में 31 दिसम्बर 1953 एवं 29 अप्रैल 1954 को बैठको का आयोजन किया गया। अतः 1954 में प. नेहरू एवं चीनी प्रधानमंत्री के मध्य पंचशील के सिद्धांतों के तहत् एक समझौता किया गया जिसमें भारत ने तब के नेफा और वर्तमान के अरूणाचल प्रदेश की सीमा जिसे मैकमोहन रेखा के नाम से जाना जाता है और जिसे शिमला में ब्रिटिश इंडिया तिब्बत एवं चीन ने मिलकर निश्चित की थी उस पर से अपने विशेषाधिकारों को समाप्त कर लिया व तिब्बत को पूर्ण रूप से चीन का एक भाग मान लिया। इस प्रकार भारत ने शांति को महत्व देते हुए पंचशील के सिद्धांतों के मूल तत्व शांतिप्रियता का पालन किया। स्वतन्त्रता के उपरान्त हांलाकि इस संबंध सौहार्दपूर्ण हो गये पं. नेहरू चीन गये व चाऊ इन लाई ने भी भारत की यात्रा की।

1956 के वान्डुग सम्मेलन में इस समझौते को विस्तृत रूप दिया गया। विश्व के अन्य राष्ट्रों ने भी पंचशील के सिद्धांतों को मान्यता दी क्योकि ये सिद्धांत अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। प. नेहरू का मत था कि यदि विश्व के सभी राष्ट्र पंचशील के सिद्धांतों को मान्यता दे देते है तो विश्व की अनेक समस्याओं का निदान हो जाएगा। वास्तव में पंचशील के सिद्धांत वे आदर्श है जिन्हें यथार्थ जीवन में उतारा जाना चाहिए। इनमें हमें नैतिक शक्ति प्राप्त होती है हम अन्याय व आक्रमण का प्रतिकार कर सकते हैं। आचार्य कृपलानी का भी मत था कि ''यह महान सिद्धांत पूर्णतः पापपून (वर्तमान) परिस्थितियों की उपज है क्योंकि इन्हें आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक रूप से संबद्ध एक प्राचीन राष्ट्र के विनाश पर हमारी स्वीकृति प्राप्त करने के लिए प्रतिपादित किया गया है।''

संधि के उपरान्त छोडे गये विशेषाधिकारों के संबंध में प. नेहरू का कथन था कि ये वहॉ के वर्तमान परिस्थितियों को एक पहचान देने जैसा है, ऐतिहासिक एवं व्यावहारिक कारणों से यह कदम उठाया गया। इस संबंध प. नेहरू को धक्का तब पहुचा जब चीन के एक शासकीय समाचार पत्र में "Peoble's Daily" में एक खबर छपी कि ''चीन से सिक्यांग जाने वाली सड़क का निर्माण कार्यपूर्ण हो चुका है चूंकि यह सड़क आक्साई चीन से होकर गुजरती थी जो भारतीय सीमाक्षेत्र के अन्तर्गत आती थी। तब प. नेहरू ने प्रधानमंत्री चाऊ–इन–लाई को इस संबंध में उनकी मंशा जानने को एक पत्र लिखा जिसका एक माह उपरांत उत्तर प्राप्त हुआ जिसमें कहा गया कि भारत चीन की सीमा औपचारिक तौर पर निश्चित नहीं। उसी समय एक ओर घटना घटित हुई। तिब्बत में बौद्ध धर्मगुरू दलाईलामा को विश्वास हो गया कि चीन की सेना उनको गिरफ्तार करने कभी भी आ सकती है तो वे अपने कुछ अनुयायियों के साथ तिब्बत से भारत आ गये। उस समय चाऊ–इन–लाई विदेशी दौरे पर थे। कि दलाईलामा के भारत में शरण को प. नेहरू द्वारा स्वीकार नहीं किया गया और समझाकर वापस उन्हें तिब्बत वापस भेज दिया क्योंकि वे भारत चीन के संबंधों में तिब्बत को लेकर किसी प्रकार का विवाद नहीं चाहते थे।

पुनः 1958 में 24 अप्रैल में दलाईलामा अपने अनुयायियों के साथ भारत में शरण हेतु आए तो पं. नेहरू ने उन्हें शरण की आज्ञा दी और स्वयं पं. नेहरू उनसे मिलने मसूरी गये। उनका मिलना चीन को रास नहीं आया जिससें दोनों राष्ट्रों के मध्य कुटनीति से अधिक राजनीति होने लगी। पंचशील के सिद्धांतों की Valitity 8 वर्ष की थी। Valitity समाप्त होते ही चीन ने भारत पर सन् 1962 में आक्रमण कर दिया जिसमें भारत को हार का सामना करना पड़ा और इस आक्रमण ने पंचशील के सिद्धांतों पर भी आघात किया।

1962 के युद्ध में भारत को मिली पराजय का जिम्मेदार पं. नेहरू को माना जाता है। जब द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी के द्वारा ब्रिटेन को निरंतर पराजय प्राप्त हो रही थी तब ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल ने सैनिकों के उत्साहवर्धन हेतु संदेश दिया था कि ''हम हर परिस्थिति में अपने देश की रक्षा इसके लिए हम पहाड़ो, समुद्र तटों सड़कों एवं जमीन पर लड़ेंगे पर हथियार नहीं डालेगे।'' 1962 में प्रधानमंत्री चर्चिल की तुलना में पं. नेहरू का सैनिकों को दिया गया संदेश निरूत्साही था जिसमें भारत के साथ –साथ आसाम के निवासियों की हिम्मत भी टूट सी गई। उन्होनें अपने संदेश में आसाम के लोगों का उल्लेख सहानुभूति के इस अंदाज से किया मानो वे उन्हें अंतिम विदाई दे रहे हो आज भी आसाम के नागरिक इस भाषण का उल्लेख करते हैं। उन्होनें 20 अक्टूबर 1962 को लोगों को संबोधित किया और लगभग एक माह की संवादहीनता के उपरान्त 20 नवम्बर 1962 पुनः निराशाजनक आवाज में संबोधित किया कि चीन भारत के साथ दोहरी नीति का अनुसरण कर रहा है इसलिए उससे मिलने वाले धोखे के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। वांलौगसीला, वोमडील में भारतीय सेना की हुई पराजय के लिए आसाम के लोगों ने उन्हें क्षमा नहीं किया। 25 अक्टूबर 1962 के रूसी समाचार पत्र ''प्रावदा'' में समाचार प्रकाशित हुआ कि ''चीन हमारा भाई और भारतीय हमारे मित्र मात्र है।'' इस समाचार से निराशा का वातावरण निर्मित हुआ।

वर्तमान परिपेक्ष्य –

भारत–चीन संबंधों में सबसे प्रमुख समस्या सीमा विवाद एवं तिब्बत है। 25 जून 1955 को भारत सरकार एवं रूस के प्रधानमंत्री बुल्गालिन ख्रुश्चेव ने संयुक्त विज्ञप्ति जारी कर पंचशील के पांच सिद्धांतों पर अपनी मोहर लगाई। 1964 में तटस्थ राज्यों का सम्मेलन संयुक्त अरब गणराज्य के काहिरा में जो सम्मेलन हुआ उसमें भी लाल बहादूर शास्त्री पंचशील के सिद्धांतों के आधार पर संबंध रखने पर बल दिया। जनवरी 1966 में ताशकन्द समझौता में भी पंचशील के सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हुए समझौता किया गया। 3500 कि.मी. की सीमा रेखा को लेकर सदैव ही भारत चीन के मध्य तनाव उत्पन्न होते रहा है। वास्तव में पाकिस्तान ने चीन को भारत के शत्रु के रूप में काराकोरम क्षेत्र में बसाया व पाक अधिकृत काश्मीर की लगभग 2600 वर्गमील भूमि भी चीन को प्रदान कर दी। चीनी राष्ट्रपति जियांग जोमीन ने नवम्बर 1966 में भारत की यात्रा की जिसमें एक समझौते के तहत वास्तविक नियंत्रण रेखा पर आक्रमण ना करने का वचन दिया। इस यात्रा में 11 सूत्रीय समझौता किया गया पुनः 1967 में तेल एवं गैस को प्राप्त करने के संबंध में समझौता हुआ।

70 के दशक में भारत चीन संबंधों में सुधार कर संबंधो को घनिष्ठ करने की दिशा में पहल की गई। भारत ने 1998 के मध्य पांच परमाणु परीक्षण कर अपने आपको शस्त्र धारक राष्ट्र घोषित किया। इसके कारण 5 जून 1998 में UN पर दबाव बनाकर चीन ने परमाणु परीक्षण बन्द करने एवं शस्त्र विकास कार्यक्रम बन्द करने के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करवा लिये। 1998 में रीजनल एशियन फोरम में दोनों देशों के मध्य वार्ता द्वारा पंचशील सिद्धांतों के आधार पर संबंधों को जारी रखने का निर्णय लिया गया। अक्टूबर 1998 में अटल बिहारी बाजपेयी एवं दलाईलामा की भेट को चीन के विरूद्ध तिब्बत–कार्ड का प्रयोग की संज्ञा दी गई। 1996 में सांझा कार्य समूह की बैठक में दोनों राष्ट्रों में विकास के सभी पहलुओं पर समझौते के संबंध में वार्ता हुई। काश्मीर के मुद्दें पर पाकिस्तान को दोषी सिद्ध करते हुए चीन द्वारा W.T.O. की सदस्यता लेने में भारत का समर्थन किया। 2003 में प्रधानमंत्री वन चा पाओ ने पंचशील के सिद्धांतों को आधार बनाते हुए चतुर्मुखी घोषणापत्र पर हस्तसक्षर किये।

इस समय भारत एवं चीन दोनों ही अपने शांतिपूर्ण विकास में रत है अर्थात 21वी सदी में भारत चीन प्रतिद्वदी व मित्र दोनों है इसी संदर्भ में 2014 में चीनी प्रधानमंत्री अहमदाबाद आये। जिसमें कैलाश मानसरोवर यात्रा के नवीन मार्ग, क्षेत्रीय मुद्दों, औद्योगिक पार्क एवं रेल्वे का सहयोग जैसे विषयों पर 11 समझौतो पर हस्ताक्षर किये। हांलाकि उसी वक्त लगभग 1000 पी.एल.ए. के सैनिक जम्मू काश्मीर के पामार क्षेत्र में प्रवेश कर गये इस मुद्दे को भी उनके सामने रखा गया।

भारत भूटान एवं चीन को मिलाने वाला बिन्दू को भारत में डोकलाम, भूटान में डोकला और चीन में डोकलाक के नाम से संबोधित किया जाता है। वास्तव में डोकलाम एक पठारी क्षेत्र है जो भूटाने हा घाटी, भारत के पूर्व सिक्किम जिले एवं चीन की यदोग काउन्टी के मध्यस्थित है। डोकलाम क्षेत्र में चीन एक सड़क का निर्माण करा रहा है जो भारतीय सीमा से सटी हुई है यदि इस सड़क का निर्माण हो जाता है तो 20 कि.मी. की सड़क जो हमारे उत्तरपूर्वी राज्यों को जोड़ती है चीन वहॉ तक पहुंच जाएगा जिसके कारण आये दिन तनाव की स्थिति निर्मित होगी। उसमें चीन का कथन था भारत 1962 की अपनी हार को कभी ना विस्मृत करे वही भारत ने प्रतिक्रिया स्वरूप कहा था कि वो 1962 था यह 2017 समय परिवर्तित हो गया है। हम आपके किसी भी आक्रमण का प्रतिउत्तर देने हेतु सक्षम है। जिसका प्रभाव यह पडा कि चीन ने हिमाचल प्रदेश के मार्ग से 56 हिन्दुओं को मानसरोवर जाने की आज्ञा दी।

निष्कर्ष–

भारत में चीन सबसे अधिक सामान निर्यात करता है चीनी टेलीकाम कम्पनियां 1999 से भारत में लाभ प्राप्त कर रही है। दिल्ली मेट्रो में भी शंघाई अरबन ग्रुप कारपोरेशन कम्पनी कार्य कर रही है। पावर सेक्टर के 70 प्रतिशत से 80 प्रतिशत उत्पाद चीन से आते हैं। दवाईयों के लिए कच्चे माल का आयात भारत चीन से करता है। 2018 27 मई को भारत ने चीन के साफ्टवेयर बाजार का लाभ प्राप्त करने के लिए दूसरे सूचना औद्योगिकी गलियारे का प्रारम्भ किया। डोकलाम विवाद के सन्दर्भ में विदेशी मामलों की स्थायी समिति ने 4 दिस. 2018 को रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसके अध्यक्ष श्री शशि थरूर ने डोकलाम में अतिक्रमण को चीन एवं भूटान के मध्य हुए समझौते का उल्लंघन करार दिया। 890 कि.मी. की साझा सीमा के संबंध में 2018 में बुहान एवं 2019 में चेन्नई में बातचीत का सिलसिला या क्रम प्रारम्भ किया गया। 11 वॉ ब्रिक्स सम्मेलन 13,14 नवम्बर 2019 को ब्राजील की राजधानी ब्रसिलिया में आयोजित किया वहॉ चीन ने भारत से स्पष्ट किया कि वह महात्मा बुद्ध के द्वारा निर्मित एवं पं. नेहरू द्वारा प्रतिपादित पंचशील (हिन्दी चीनी भाई भाई) के अनुसार भारत चीन संबंधों को गति देना चाहता है। जिससें पंचशील के आधार पर विश्व राजनीति में एक नवीन अध्याय का प्रारम्भ होगा। भारत ने बड़ी ही सुझबूझ के साथ चीनी प्रभुत्व वाले शंघाई सहयोग संगठन में सम्मिलित होने का निर्णय लिया, और कजाकस्तान में आयोजित 8 एवं 9 जून 2019 की बैठकों में भाग लिया। मोदी का कथन है कि मैं SCO के साथ भारत के सम्पर्क को और अधिक प्रगाठ करना चाहता हूॅ यह सम्पर्क आर्थिक सहयोग एवं आतंकवाद निरोधक सहयोग में हमारी मदद करेगा। बम्हपुत्र नदी के जल बटवारें पर भी निरन्तर वार्तालाप जारी है।

वास्तव में पं. नेहरू द्वारा प्रतिपादित पंचशील के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है। डोकलाम विवाद में भी पंचशील के सिद्धांतों का उल्लेख किया क्योंकि इस विवाद का अंत करने के लिए वार्ता का निर्णय भी पंचशील के सिद्धांतों के आधार पर लिया गया था। हालाकि उस समय राम मनोहर लोहिया जो उनके मित्र थे ने कहा था कि ''भारतीय जनतंत्र एवं जनजीवन के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा प. नेहरू थे। भारत की प्रत्येक समस्या का जिम्मेदार उन्हें ही माना जाता है चाहे वह काश्मीर का विवाद हो समाजवाद की अस्वीकृति या उत्तरपूर्व का तनाव। प. नेहरू को पश्चिमी आधुनिकता के पौधे को भारत की भूमि पर जबरन लगाने का अपराधी माना जाता है जिससे इस पावन भूमि की पोषक क्षमता को सोख लिया।''

चीन युद्ध की असफलता की जिम्मेदारी का वहन स्वयं प. नेहरू ने लिया और इसलिए वे मरणोपरान्त भी लोकप्रिय बने रहे। नेहरू ने कहा था कि यदि पंचशील के सिद्धांतों को विश्व के सभी राष्ट्रों द्वारा मान्यता दे दी जाती है तो कभी कोई युद्ध एवं संघर्ष नहीं होगा। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उनका ये अमर दिशा निर्देश ध्रुव तारे के समान सदैव ही जगमगाता रहेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. अरविन्द मिश्रा – भारत के लिए महत्वपूर्ण क्यों है शंघाई सहयोग संगठन, 8 जून 2017, नवभारत, पृ.क्र. 6।
2. पंचशील सिद्धांतों के छः दशक –22 जून 2014 लाइव हिन्दुस्तान टीम 22 जून 2014।
3. अनुवाद एवं संग्रह वासुदेव देसार – त्रिपिटिक प्रवेश पृ. 1–1, कोविन्द प्रकाशक दुर्गादास ISBN 99946-973-9-0
4. पिछले 40 साल से एक भी गोली नहीं चली, दैनिक जागरण 13 जून 2014, पृ.क्र. 6।
5. डॉ. बी.एल. फडिया – भारत की विदेश नीति,
6. भारत चीन संबंधों में नवीन युग का प्रारम्भ दैनिक भास्कर, जून 2019, पृ.क्र. 6।
7. भारत चीन जल संबधों से भविष्य की राह, दैनिक भास्कर, जून 22– 2018, पृ.क्र. 6।
8. विदेशी मामलो की स्थायी समिति की रपट, 4 सित. 2018, पृ.क्र. 1 से 10।
9. पडौसियों को साधकर ड्रेगन को घेरने की कोशिश, दैनिक जागरण–10 जून 2017, पृ.क्र. 7।
10. मोहित चतुर्वेदी – भारत के साथ युद्ध चीन को बर्बाद कर देगा, इडिया टुडे, पृ.क्र. 19।